



International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 155-156
www.educationjournal.info
Received: 13-01-2023
Accepted: 18-02-2023

रंजना सिंह

सहायक शिक्षक (व्याख्याता),
वसुंधरा टीचर ट्रेनिंग कॉलेज,
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

रंजना सिंह

सारांश

विश्व के प्रत्येक प्राणी की कुछ न कुछ आकांक्षा होती है। विश्व का प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य के परिणाम को सही एवं सटीक जानकारी प्राप्त करना चाहता है। अध्यापक अपने विद्यार्थियों (उत्पादों) के शैक्षिक उपलब्धि (गुणवत्ता) की जानकारी के लिए मापन और मूल्यांकन की विविध प्रविधियों का प्रयोग कर करते हैं। क्योंकि आकांक्षा स्तर व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण पक्ष है तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः शोधार्थी के मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि क्या उच्च शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में अन्तर है? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने इस अध्ययन हेतु 200 उच्च शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों तथा 200 निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया।

कूट शब्द: शिक्षा, शारीरिक, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान

प्रस्तावना

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा जीवन से घनिष्ठ रूप से संबन्धित है। शिक्षा वह संस्कृति है जो हर पीढ़ी को इस प्रयोजन में प्रदान की जाती है कि वह कम से कम इसे उसी रूप में बनाये रखे और यदि सम्भव हो तो जो वृद्धि का स्तर प्राप्त हो चुका है उसे उपर उठाये।

शिक्षा सतत् अनुभवों के पुनर्संगठन एवं पुनर्रचना की प्रक्रिया है। “अनुभव के द्वारा हमारे व्यवहार में जो भी परिवर्तन आते हैं, वे सभी शिक्षा के फलस्वरूप हैं। शिक्षा का अर्थ ही अनुभवों का निर्माण एवं पुनर्निर्माण है, और इस दृष्टि से पाठशाला के बाहर भी जो अनुभव प्राप्त किए जाते हैं, वे सभी शिक्षा के अंग हैं। शिक्षा ऐसी क्रिया अथवा प्रयास है, जिसमें मानव समाज के अधिक परिपक्व लोग, न्यून परिपक्व व्यक्तियों की अधिकाधिक परिपक्वता के लिए प्रयास करते हैं तथा इस प्रकार मानव जीवन को अच्छा बनाने में योगदान करते हैं।”

“जिस प्रकार शिक्षा एक ओर बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है, उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति की भाँति समाज भी शिक्षा के चमत्कार से लाभान्वित होता है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से हस्तान्तरित करता है कि उनके हृदय में देश-प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्वलित हो जाती है। जब ऐसी भावनाओं तथा आदर्शों से भरे हुए बालक तैयार होकर समाज अथवा देश की सेवा का व्रत धारण करके मैदान में निकलेंगे तथा अपने जीवन में त्याग से अनुकरणीय कार्य करेंगे तो समाज भी निरन्तर उन्नति के शिखर पर चढ़ता ही रहेगा। इस प्रकार व्यक्ति तथा समाज दोनों के विकास में शिक्षा परम आवश्यक है।

व्यक्ति का बहुआयामी विकास जैसे शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति को ज्ञान प्राप्ति, कौशल अर्जन तथा सांस्कृतिक सामुदायिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन की क्षमता की प्रदान की जाती है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वोत्तम विकास का आधार माना है क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। मनुष्य के शरीर में मस्तिष्क का महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि मनुष्य द्वारा जो भी कार्य किया जाता है वह अपने मस्तिष्क के संकेत अथवा मन के अनुसार करता है। इसी प्रकार जब तक मनुष्य का मन स्वस्थ तथा संवेगों में प्रियंका चौहान एवं डॉ. (श्रीमती) अंजू टिन्ना: विद्यार्थियों की सावेगिक बुद्धि एवं मानसिक तनाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि..... परिपक्वता नहीं होगी तब तक वह किसी भी कार्य को ठीक प्रकार से नहीं कर सकता। वर्तमान जीवनशैली अत्यधिक जटिलतम होती जा रही हैं जिसके कारण व्यक्ति को पग-पग पर कठिनाईयों तथा निराशा का सामना करना पड़ता है। मानसिक परेशानियों, अपरिपक्व संवेगों, जीवन की

Corresponding Author:

रंजना सिंह

सहायक शिक्षक (व्याख्याता),
वसुंधरा टीचर ट्रेनिंग कॉलेज,
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

उलझनों तथा असंतुलित वातावरण के कारण व्यक्ति परिवार में समाज में अपने का उचित प्रकार में समायोजित नहीं कर पाते व सफल जीवन जीने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। इसलिये मनुष्य को वातावरण के साथ उचित सामंजस्य स्थापित करने के लिए मानसिक दृष्टि से स्वस्थ होना आवश्यक है।

विश्व प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाशास्त्रीयों ने शिक्षा का केन्द्र बालक को माना है, जिसमें शिक्षक, विद्यालय एवं माता पिता उसके मानसिक, शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक समाज में बच्चों को उच्च स्तरीय शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कराने में विभिन्न तत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। माता-पिता एवं विद्यालय संस्थान अधिक से अधिक उपलब्धि प्राप्त कराने में अधिक परिश्रम करते हैं। लेकिन माता-पिता की इस प्रत्याशा से बच्चों पर मनोवैज्ञानिक एवं संवेगात्मक रूप से अत्याधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थियों के कठिन मेहनत करने पर भी उच्च स्तरीय शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाते। ऐसे में वे विभिन्न प्रकार के तनाव से ग्रसित हो जाते हैं। रिजवान एवं महमूद (2010), ने पाया कि, शैक्षिक तनाव, शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैन (2007), ने पाया कि माता-पिता द्वारा दिये गये प्रोत्साहन से शैक्षिक तनाव में कमी होती है, और शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मकता वृद्धि होती है। सपु (2007), में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने में किशोरों में शैक्षिक तनाव के होने का कारण प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षिक वातावरण में उपलब्धि को नियमित रखने के कारण होता है। शोधकर्ता ने हे०न०ब० गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में होने वाले शैक्षिक तनाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव का अध्ययन करने का निर्णय लिया।

अध्ययन की आवश्यकता

एक राष्ट्र की प्रगति उसकी विद्यार्थियों की प्रगति पर निर्भर करती है। विद्यार्थियों की प्रगति उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर आधारित होती है। शिक्षा आयोग (1964-66) द्वारा भी कहा गया है, "भारत के भविष्य का निर्माण उसके कक्षा कक्ष में हो रहा है।" लेकिन वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि, शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि दिन-प्रतिदिन शैक्षिक तनाव के कारण प्रभावित हो रही है। शैक्षणिक संरचनाओं का कठिन होना, कठिन पाठ्यक्रमों का निर्माण करना, विद्यालय द्वारा दिया जाने वाला अतिरिक्त कार्य, उच्च उपलब्धि के लिए दबाव डालना एवं बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य का लगातार निम्न होना आदि अनेक कारण शैक्षिक तनाव को प्रभावी करती है। मानसिक स्वास्थ्य विद्यार्थी जीवन में सबसे महत्वपूर्ण होता है जिसकी प्रासंगिकता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने सतत विकास के लक्ष्यों में सितम्बर (2015), मानसिक स्वास्थ्य को सम्मिलित किया गया। किशोरावस्था में विद्यार्थी मानसिक स्वास्थ्य से सर्वाधिक रूप से प्रभावित हो रहे हैं। मानसिक स्वास्थ्य के बिगड़ने में अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा, एल्कोहल एवं मादक प्रदार्थों का अत्याधिक प्रयोग, अनियमित दिनचर्या एवं शैक्षिक एवं मानसिक तनाव आदि अनेक कारण है। शोधकर्ता ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की गिरती शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक तनाव का अध्ययन करने का निर्णय किया।

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण

आभा एवं शुभा (2008), में पाया कि माता पिता द्वारा शैक्षिक वातावरण को नियन्त्रित करने से विद्यार्थियों में तनाव एवं निराशा का स्तर अधिक हो जाता है। बनर्जी (2011), शैक्षिक तनाव एक ऐसा तनाव है, जो कठिन विद्यालय कार्यक्रम, शिक्षक एवं माता पिता के अधिक प्रत्याशा एवं मांग, निम्न शैक्षिक उपलब्धि, खराब अधिगम आदत के कारण होता है। बेक एवं श्रीवास्तव (1991), में पाया कि शैक्षिक तनाव अत्याधिक शैक्षिक उपलब्धि की मांग,

अधिक पाठ्यक्रम का बोझ, लम्बा अधिगम कार्य, स्वतन्त्र समय की कमी, पुर्नबलन की कमी, शिक्षकों के प्रोत्साहन में कमी एवं शिक्षण प्रक्रिया का अधिक कठिन होना महत्वपूर्ण कारण है।

शोध उद्देश्य

- विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक तनाव का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक तनाव के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में शैक्षिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।
- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धियों वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि उनके आयाम लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक व उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के विकास के उचित अवसर दिये जायें जिससे छात्रों को निर्णय लेने एवं उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास करने में सहायक हो। उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव उसके भिन्न पक्षों एवं आकांक्षा स्तर पर पड़ता है, छात्रों के आकांक्षा स्तर का ज्ञान हो जाने पर छात्रों के आकांक्षा स्तर निर्धारण में सही तरीके से निर्देशन एवं परामर्श दिया जा सकें। जिससे छात्रों के आत्म विश्वास में वृद्धि होगी तथा विद्यार्थियों में निम्न शैक्षिक उपलब्धि के कारण उत्पन्न कृण्डा, तनाव एवं अवसाद को शिक्षकों एवं अभिभावकों द्वारा उचित निर्देशन व परामर्श देकर दूर किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. आभा, शुभा (2008) एकेडमिक स्ट्रेस एण्ड एडोलोसेण्ट्स डिस्ट्रेस : द एक्सपीरिअन्स ऑफ 12 स्टैण्डर्ड स्टूडेण्ट्स इन चेन्नई, इण्डिया डिजरटेशन एब्सट्रैक्ट इण्टरनेशनल 69(8), 33-42।
2. जैन, एम. (2007), एकेडमिक एग्जाइटी अमोंग एडोलोसेण्ट्स रोल ऑफ कोचिंग एण्ड पैरेन्टल इनकरेजमेंट, जनरल ऑफ नेशनल एकेडमी ऑफ साइकोलोजी इण्डिया, वॉल्यूम- 52।
3. वेडेल, एन० : माता पिता की सहभागी क्रियाकलापों और छात्रों की निष्पत्ति के बीच-में सार्थक संबंध की पहचान, लघु शोध प्रबंध, शोध सारिका अंतर्राष्ट्रीय 72(12), (2011)
4. Mishra S, et al. Impact of Family Environment on Academic Achievement of Secondary School Students in Science. International Journal of Research in Economics & Social sciences; c2012. p. 42-49.
5. एंथोनी, ओ० ओवेटा रू होम इनवायरमेण्टल फैक्टर्स इफेक्टिंग स्टूडेण्ट्स, एकेडमिक परफार्मेंस इन एबिया स्टेट, नाइजीरिया, रूरल इनवायरमेण्ट, एजूकेशन पर्सनाल्टी-जेलगावा, 7-8-02-2014, (2014). पृ० 141-179